संपादकीय

माता-पिता और शिक्षक बच्चों के भविष्य के निर्माण व विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे सबसे अधिक अच्छे बनें, सबसे ज़्यादा तरक्की करें, ऐसा ही विचार शिक्षक भी अपने विद्यार्थियों के बारे में रखते हैं। परंतु क्या माता-पिता वास्तव में बच्चों के सही विकास में योगदान देते हैं, क्या उनकी परवरिश बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनाने में सही दिशा देती है? क्या शिक्षक वास्तव में अपने विद्यार्थियों को वैसी शिक्षा दे पाते हैं, जिसे पाने का उन्हें अधिकार है। क्या माता-पिता और शिक्षक बच्चों के भाग्य-निर्माता हैं? अथवा उन्हें बच्चों के संदर्भ में अपनी भूमिका पर पुनःविचार करने की ज़रूरत है आदि ऐसे सरोकार हैं जिन पर विमर्श किए जाने की ज़रूरत है। प्रभात कुमार और आशीष श्रीवास्तव का लेख कुछ ऐसे ही सरोकारों का अवलोकन प्रस्तुत करता है।

अभिभावक तथा शिक्षक बच्चों से शैक्षिक प्रक्रिया में अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की अपेक्षा रखते हैं, परंतु अच्छा अकादमिक प्रदर्शन किसे माने, इसमें मतभेद हो सकते हैं। शशिकांत गौड़ तथा अमित कुमार त्रिपाठी ने अपने लेख में वाराणसी जनपद उत्तर प्रदेश के कुछ सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिभावकों और शिक्षकों के अकादमिक प्रदर्शन के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जिसमें अच्छा व खराब प्रदर्शन शामिल है। Multiple Intelligence या बुद्धि बहुलता के सिद्धांत के अनुसार हर बच्चे में विशिष्ट प्रतिभाएँ होती हैं, परंतु हम कुछ प्रतिभाओं को तो महत्व देते हैं, जबकि कुछ को नकार देते हैं। मंजीत सेन गुप्त अपने लेख में उदाहरण सहित समझा रहे हैं कि समावेशी कक्षा में हर बच्चा श्रेष्ठ है, केवल उसे पहचानकर विकास के उचित अवसर दिए जाने की ज़रूरत है।

महात्मा गाँधी द्वारा भारतीय समाज व संस्कृति को ध्यान में रखते हुए बेसिक शिक्षा व्यवस्था सुझाई गई थी, जिसमें अक्षर ज्ञान के साथ-साथ हाथ से काम करने पर ज़ोर दिया गया था। रश्मि श्रीवास्तव बता रहीं हैं कि बुनियादी शिक्षा की अवधारणा आज भी उतनी ही उपयोगी बनी हुई है। अब हम कौशल भारत के विकास की बात कर रहे हैं।

आज़ादी के बाद से हमारे देश में नगरों व शहरों का विकास तेज़ी से हुआ है और ग्रामीण क्षेत्रों से लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। परंतु आज भी हमारी दो-तिहाई के लगभग जनसंख्या गाँवों में रहती है। जितेन्द्र लोढ़ा ने स्पष्ट किया है कि यदि हम भारत का विकास चाहते हैं तो हमें ग्रामीण

शिक्षा का वर्तमान संदर्भ के अनुसार विकास करना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन मलिन बस्तियों को जन्म देता है, जिनमें आवश्यक जन-सुविधाओं का अभाव रहता है और आबादी बहुत अधिक होती है। रश्मि गोरे और अंबिका सिंह ने अपने लेख में मलिन बस्तियों के पर्यावरण प्रदूषण की चुनौतियों का खुलासा किया है व इन समस्याओं को दूर करने का सुझाव भी दिया है। केवलानंद काण्डपाल ने बहुभाषिकता पर ज़ोर देते हुए प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के शिक्षाशास्त्रीय पहलुओं पर विमर्श किया है।

दिनेश कुमार गुप्ता ने प्रसिद्ध समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती की शैक्षिक संकल्पना पर प्रकाश डाला है। स्वामी जी ने शिक्षा को अंधविश्वास, आर्थिक विषमताओं, धार्मिक संकीर्णताएँ एवं जाति प्रथा के बंधनों से पृथक रखते हुए सभी को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार का समर्थन किया था, जिस लक्ष्य को पाने के लिए हम आज भी प्रयास कर रहे हैं। आरती गुप्ता ने सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे मीना मंच का सरल शब्दों में विवरण देते हुए बताया है कि किस प्रकार यह मंच प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में अपना योगदान कर रहा है।

विनय कुमार और आलोक गार्डिया ने नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के तहत विद्यालयी सुरक्षा के प्रबंधों के प्रावधान की चर्चा करते हुए इनके कार्यान्वयन पर ज़ोर दिया है। शंकर शरण ने अपने लेख में मार्क्सवाद की विचारधारा की अकादमिक समालोचना प्रस्तुत की है।

अंक के अंत में दो पुस्तक समीक्षाएँ दी गई हैं। जॉन हॉल्ट की पुस्तक '*बच्चे असफल क्यों होते हैं*' की समीक्षा पतंजलि मिश्र एवं भूपेन्द्र सिंह द्वारा की गई है और महेश पुनेठा की पुस्तक '*दीवार पत्रिका और रचनात्मकता*' की समीक्षा बिनीता उप्रेती द्वारा की गई है।

सभी पाठकों को नववर्ष 2017 की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

अकादमिक संपादकीय समिति